पाठ - 9

الدرس التاسع - هندي

मुहम्मदुर रसूलुल्लाह का अर्थ

معني محمد رسول الله

मुहम्मदुर रसूलुल्लाह का मतलब यह है कि बाहिरी और भित्रि हर तरह से यह मान लिया जाए कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और उसी के अनुसार अमल किया जाए यानी आपके आदेशों का पालन किया जाए, आपकी बतायी हुई चीज़ों की पुष्टि की जाए, जिन.जिन चीज़ों से आपने रोका है, मना किया है, उनसे दूर रहा जाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इबादत के जो विधि और तरीक़े बताये हैं, उन्हीं के ज़रिया अल्लाह की इबादत की जाए।

मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' की गवाही देने के दो अंश हैं : पहला यह है कि आप अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं। इससे आप की हैसियत सुनिश्चित हो जाती है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के भक्त और उसके रसूल हैं। इन दोनों विशेषताओं में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मख़लूकों में सबसे कामिल और पूर्ण इंसान हैं। यहां **अब्द**' से अभिप्राय इबादतगुज़ार बन्दा और भक्त है यानी आप इंसान हैं और उसी चीज़ से पैदा हुए हैं जिससे इंसानों की रचना की गयी है। और संसारिक परम्परा अनुसार अन्य इंसानों को जिन परिस्थितियों से गुज़रना पड़ता है, उनसे आप को भी गुज़रना पड़ता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُم यानी ''ऐ नबी! आप कह दीजिए कि मैं तुम लोगों की तरह ही एक इंसान हूं। (सूरह अलकहफ़, 110) और कहा गया है:

الحَمْدُ لله الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا﴾ यानी, ''तमाम प्रशंसा उसी अल्लाह के लिए हैं जिसने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उसमें किसी तरह की कोई कमी बाकी नहीं है

रसूल उस व्यक्ति को कहते हैं जिसे लोगों को अल्लाह की तरफ से शुभ सुचना सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा गया हो। इन दोनों विशेषताओं की गवाही देने की स्थिति में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हैसियत सुनिष्चित हो जाती है और उसमें बढ़ाने घटाने की संभावना समाप्त हो जाती है।

बहुत से ऐसे लोग हैं जो अपने आपको अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती बताते हैं, लेकिन आपके बारे में बढ़ा चढ़ा कर बोलते हैं और आपकी शान में जेयादती से काम लेते हैं। यहां तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बन्दे के दर्जे से उठाकर अल्लाह के साथ इबादत के दर्जे तक पहुंचा देते हैं। दूसरी ओर कुछ दूसरे लोग आपकी रिसालत का इन्कार करते हैं, आपके अनुशरण में कमी करते हैं और वाजिब अधिकारों में सुस्ती और कोताही बरतते हैं, और ऐसे क़थनों पर भरोसा करते हैं जो आपकी लायी हुई शरीयत के खिलाफ़ हुआ करती हैं। इसी लिए हर मुस्लिम व्यक्ति के उपर यह अनिवार्य है कि वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में कुछ घटथप किये बिना ईमान लाए और आज्ञा पालन करे इस लिए कि आपका उपदेश और सन्देश सब अल्लाह की तरफ से है ।